Class – T.D.C. Part I
Paper – II
तत्वमीमांसा
(Metaphysics)
Topic – डार्विन का विकासवाद
(Darwin's Theory of Evolution)

Dr. Poonam Sharma
Assistant Professor
Deptt. of Philosophy
R.N. College, Hajipur

डार्विन का विकासवाद
(Darwin's Theory of Evolution)

जीवशास्त्री डार्विन के अनुसार यह विश्व विकास के आधार पर बना है। उन्होंने विकास के कुछ सामान्य नियमों की चर्चा की है जिसके द्वारा जीवों का सरल से जटिल रूप में क्रमशः परिवर्तन होता है। उनका यह विकास-सिद्धान्त जैवीय विकास-सिद्धान्त (Theory of Biological Evolution) कहलाता है।

डार्विन के अनुसार विकास-क्रम के चार नियम हैं –

(1) जीवन-संघर्ष (Struggle for Existence)
(2) आकस्मिक परिवर्तन (Chance Variation)
(3) योग्यतम की रक्षा (Survival of the Fittest)
एवं (4) आनुवंशिकता (Heredity)

① जीवन-संघर्ष – डार्विन के अनुसार संसार में जीव अपने अस्तित्व को बनाये रखने के लिए निरन्तर संघर्ष करते रहते हैं। स्थान एवं भोजन-सामग्री की कमी के चलते प्रत्येक जीव यह चाहता है कि दूसरे जीव के अस्तित्व को समाप्त कर अपना तथा अपनी सन्तान की जीवन-रक्षा करें। प्रसिद्ध अर्थशास्त्री मालथस (Malthus) के अनुसार जीवों की संख्या में वृद्धि ज्यामितिक अनुपात (Geometrical Progression) में होती है अर्थात् 1, 2, 4, 8, 16, 32 ..... के क्रम में होता है, किन्तु भोजन-सामग्री की वृद्धि अंकगणितिक अनुपात (Arithmetical Progression) में होती है अर्थात् 1, 2, 3, 4, 5 6 ..... के क्रम में होता है। इसलिए अपने

जीवन की रक्षा का यह संघर्ष एक ही जाति या दो जातियों के प्राणियों के बीच होता है।

② **आकस्मिक परिवर्तन** — जीवन-संघर्ष में लगे हुए प्राणियों में बराबर परिवर्तन होते रहते हैं। बाह्य शारीरिक स्तर पर तथा आन्तरिक रूप में — दोनों प्रकार के ये परिवर्तन होते हैं। डार्विन ने इन परिवर्तनों को 'आकस्मिक परिवर्तन' कहा है क्योंकि इसका सही-सही कारण जान पाना कठिन होता है। इन परिवर्तनों में कुछ उपयोगी (Favourable) होते हैं जो जीवन-संघर्ष में सहायक होते हैं तथा कुछ परिवर्तन अनुपयोगी (Unfavourable) होते हैं जो जीवन-रक्षा में बाधा उत्पन्न करते हैं। इन बाधक परिवर्तनों से कभी-कभी जीव का अस्तित्व भी समाप्त हो जाता है। ये परिवर्तन क्रमिक और अचानक दोनों ही रूपों में होते हैं।

③ **योग्यतम की रक्षा** — डार्विन के अनुसार विकास-क्रम का यह नियम है कि जीवन-संघर्ष में योग्यतम (Fittest) जीव की रक्षा होती है तथा अन्य जीवों का विनाश हो जाता है। 'योग्यतम' जीव शक्तिशाली को नहीं कहा गया है, बल्कि वे जीव जो स्वयं को वातावरण के साथ सबसे अधिक अभियोजित करते हैं, वे योग्यतम हैं। जिन जीवों में उपयोगी एवं अनुकूल परिवर्तन होता है, वे जीवन-संग्राम में सफल होते हैं, शेष का विनाश हो जाता है। इसप्रकार विश्व के विकास-क्रम में वे ही जीव-योनियाँ अपनी रक्षा कर पाती हैं तथा उनकी अगली पीढ़ी विकसित होती है। इन परिवर्तनों से ऐसा प्रतीत होता है कि प्रकृति स्वतः चुनाव करती है कि अनुकूल परिवर्तन वाले जीव बचे रहें तथा उनकी अगली पीढ़ी कायम रहे। डार्विन इसे 'प्राकृतिक निर्वाचन'

(Natural selection) की संज्ञा देते हैं।

④ आनुवंशिकता — डार्विन का कहना है कि जीवों में होने वाला परिवर्तन प्राकृतिक रूप से उनकी सन्तान में हस्तान्तरित हो जाता है। ये परिवर्तन स्वाभाविक रूप से पीढ़ी-दर-पीढ़ी हस्तान्तरित होते हैं और उनमें कुछ नये परिवर्तन भी जुड़ जाते हैं। अनेक वर्षों के इस परिवर्तन से एक नयी जीव-योनि का विकास होता है, जिसमें किसी अंग का या तो लोप हो जाता है या कोई नया अंग विकसित हो जाता है। ये परिवर्तन कभी आकस्मिक या कभी क्रमिक रूप में होते हैं जो आनुवंशिक होते हैं।

निष्कर्ष — डार्विन का यह विकास-सिद्धान्त मूलतः प्रकृतिवादी (Naturalistic) तथा यंत्रवादी (Mechanistic) है। जीवों के विकास का यह क्रम स्वतः प्रकृति के नियमों के द्वारा संचालित होता है। इसमें किसी बाहरी शक्ति की आवश्यकता नहीं होती। विकास की यह प्रक्रिया मशीन की भांति संचालित होती है।

समीक्षा — डार्विन के इस विकास-सिद्धान्त से विचार के क्षेत्र में क्रान्ति उत्पन्न हो गयी। इसमें कई नवीन विचार हैं, फिर भी इसकी अनेक त्रुटियाँ हैं। ये हैं —

(1) डार्विन का यह विकास-सिद्धान्त प्रथम जीव की उत्पत्ति की व्याख्या नहीं कर पाता। इस सिद्धान्त का प्रारम्भ मध्य-बिन्दु से शुरू होता है।

(2) यह सिद्धान्त यंत्रवाद का समर्थन करता है। किन्तु यह सिद्धान्त प्रयोजन पर आधारित है। जीवन को बचाये रखने के लिए संघर्ष यदि आवश्यक है, तो स्वाभाविक रूप से यह सिद्धान्त प्रयोजनवाद का पोषक है। इस सिद्धान्त का प्रयोजन ही है — जीवन की रक्षा।

(3) डार्विन का विकासवाद नवीनता (Novelty) की व्याख्या नहीं कर पाता। नवीन जीव की उत्पत्ति के सन्दर्भ में डार्विन ने जो आनुवंशिक आधार बतलाये हैं, उसे कई जीवशास्त्रियों ने अयथार्थ बतलाया है। नये जीव की उत्पत्ति का आधार 'बीज कोष' (Germ Cells) है।

इन दोषों के रहने पर भी डार्विन के मूल विचारों का महत्व है। उन्होंने वैज्ञानिक विकासवाद का बहुत ही सुव्यवस्थित उदाहरण प्रस्तुत किया है।

——X——X——